उकळती ओकळ
स्यू ग्रळता
पगा नै
सादर समरपण...

—श्याम महर्षि

उकळती ओकळ

स्यू वळता

पगा नै

सादर समरपण...

—श्याम महर्षि

म्हारी ओळचा

कवितावां, म्हारी जि दगाणी, जकीनैं मैं भात-भात री बानगी मांय खारोमीठो सुवाद लैयनै भोग्तो रैयो हू, री पडछिया हैं।

मैं आ नी कय सकू क म्हारी कवितावा आम पाठक रै किता प्रति शत नै आपरै सागै लैय र चालै है पण आ बात सजोरा कैय सकू कै कविता जठै ताई कुटम्बअर समाज रै घण कर हिस्सै री साची फोटू आग पाठक रै सामी नी राख सक, बठै ताई हूं उणनै कवितानी सीकार सकू।

रचनाकार जठै ताणी रचना रै माय यथार्थवादिता रा थोडा भोतई गुण नी राखसी बठै रचना रो कोई नै कोई उजळो अग पकायत दब'र रैय ज्यासी।

मैं जठै म्हारी कल्पना करडी मायली पीड कानी स्यू सावचेत हुय'र उणनै कविता म बाधण रै खातर रिज्यो हू बठै मानखै रै भोलकानी स्यू भी सावचेत हू। रचनावा खातर मैं आ कैय सकू क कबिता म्हारै

विगत

म्हारी ओळ्या १
आंतरो ५
वाळ ८
अेक लाम्बी कविता ११
आज रो रावण १८
चौथ रो चाँद २०
पोसाळ २१
भावा रो बिस्वास भजाण स्यू २२
मागताडा २३
रुखाळा २६
डर २७
सभ्यता २८
बुढापा ३०
मिनख ३२
मानीजता ३४
बौपारी ३६
किरसाण ४०
चिमनी रो धुवा ४२
साप ४३
पाठ ४४
जहर ४५
ऊमीजतो सैं"र ४६
हाडी ४७
मइना बरस ४८
छूट ५०
भूरजी पितर रा नाडा ५१
शिक्षा शास्त्री ५३
नौकरी ५५
मुलक रा ३० बरस ५७
पामलो लुहार ६०
दिवाळी ६२
बै लोग ६५
डिग्री ६७
उकळती आकळ ६८
रमतिया ६९
नाही कवितावा ७०
जातिवाद ७२
बदी ७३
ओकळ ७४
भतुळिया ७५
चाय रो कप ७६
बम ६८
लफासा लवतो पेट ८०
कुण जाणै ८२
नू वो दिन ८३
लीलटासी औरयो ८४
गिलगिली ८६
सुवाल ८७
पुजारी ८८
बदळाव ७९
मळटाव ९०

म्हारी ओळखां

कवितावा, म्हारी जिन्दगाणी, जकीनै मैं भात-भांत री बानगी मांय खारोमीठो सुवाद लयनै भोगतो रैयो हू, री पडछिया हैं।

मैं आ नी कैय सकू कै म्हारी कवितावा आम पाठक रै किता प्रति शत नै आपरै सागै लय'र चालै है पण आ बात सजोरा कैय सकू कै कविता जठै ताई कुटम्बअर समाज रै घण करै हिस्सै री साची फोटू आम पाठक रै सामी नी राख सकै, बठै ताई हू उणनै कवितानी सीकार सकू।

रचनाकार जठै ताणी रचना रै माय यथायवादिता रा थोडा भोतई गुण नीं राखसी बठै रचना रो कोई नै कोई उजळो अग पकायत दब'र रैय ज्यासी।

मैं जठै म्हारी कल्पना करेडो मायली पीड कानी स्यू सावचेत हुय'र उणनै कविता मे बाधण रै खातर रिज्या हू बठै मानखै रै मोलकानी स्यू भी सावचत हू। रचनावा खातर मैं आ कैय सकू क कविता म्हारै

मतस स्यू नीसरैडी एक अमूज है। हो सकै म्हारी कवितावां परम्परागत चिंतण स्यू अळगी हुय'र सीधो सपाट भावुक हिडदै री ओळखाण करावै।

घणकरी कवितावां रो सम्बन्ध भी आज रै मिनख अर बीरै सघप स्यू है। पण मिनख स्यू भी एक किलास नीच री श्रेणी माय रवणै आळा, कै दो किलो दाणा उधार मागणै आळै मिनख स्यू कितीक नैडी है आ तो आप ई जाण सकोला।

जका जुल्म सैय रैया है, बान कष्ट माय जीण रा ससकारा स्यू जद ई मुक्ति मिलसी जदक उण माय सघप करणै री भावना उगसी। बिया केमी लोगां खातर सघप आपरी आपनै दियोडी यातनावां होवै। पण जुल्म सैवणिया जद अपणै आपनै मिनख हुवण री जाच करै जद बानै सघप स्यू ताकत अर समझ दोनू मिलै।

सघप माय जै भविष्य रै सुख री कल्पना नी होव तो सघप करण आळा भी आपरी जीतन जीत्या पछ भी पीडित समझणै लाग जाव। कैवण रो अरथाव ओ ई है क मिनख मन अर भावना स्यू लगोलग तूटतो जाय रैयो है।

आज रो मिनख अपणै आपनै आत्मबोधी घणो समझ वो आपरी तरक्की कानी स्यू घणो उतावळो अर डैह फरु हुयोडो सो लागै। मिनख अथ (धन) री मासळ हाटचा कानी गडकडै दाई भाज रैयो है। इसा थोडा मिनख है जका ईमानदारी स्यू गुण अवगुण री परख राखता होवै।

कई जणा कविता नै खाली भावुकता बता र विज्ञान रो पख लव पण केमी विनान नै नीरस अर कळा रो गळो घोटण आळी बताव।

१९६६ ६७ स्यू हिन्दी राजस्थानी भाषा माय लिखणै री बाण पडी, लिखण साथ अेक लगण पडी, जकी आज लग बकरार है। उण बखत स्यू लैय'र आज ताणी राज्य री घणकरीक पत्र पत्रिकावां अर सक-

लनो माय छपतो रैयो। १९७३ स्यू आकाशवाणी माय भी दाय चार दफ रचनावा प्रसारण रो मौको मिल्यो। म्हारै मन माय लसायो क रचनावा, छपणै रो गैला खुद ब खुद रचनावा आपरी रवती स्यू करै। दिन ब दिन कवितावा सास लैवणै री स्वाभाविक प्रक्रिया दाई लिखीजणी शुरु हुयगी।

जठ वैसाख री उकळती ओकळ स्यू ओजू ई भणिजण जावतै टाबर अर खत बगतै मिनख रा पग बळै, ठा'नी कदताई आ लोगां रा पगल्या इया ई बळता रैसी। क तो आ ओकळ आपरो सुभाव छोड देसी कै लोगां रा पगल्या इता सबळ हुय जासी क बारा पग बळ नी सकै।

आजादी रा ३० बरस बीतग्या पण ओजू ई, मुलक रो थाणैदार बिया ई थाण माय बडतै भलै मिनख रो ठोकर अर मादर. री गाळ स्यू सुवागत करै।

ओजू ई गाव रो ग्रेज्युएट जुवान कचडी अर दफतरा रै अफसर स्यू बात करतो सक। ओजू ई समाज री एक बडी जमात ऊंचीपढाई बिना जुगाट अणभणिया रैय रैया है।

आज रो गाव ४०-५० बरस पल्या र गाव स्यू घणा अळगो अर फरक दरसावतो नी लागै।

गाव रो जुवान भलाई ५ स्यू १० क्लास ताणी भणीजलै पण भौतिक लडाई री दौड माय वो आज ई आपर अणभणिया बैन भाया स्यू घणो लारै समझै। उणरा मा बाप उणरी बेकारी अर खत माय काम करण री निवळी खिमता दैखर दूजा टाबरा नै सरावै अर भणीजणिया टाबर नै पढा र खोटी करणै र माथै पिसतावो कर।

उपरला चित्रम आ दीठावै क मैं म्हारो अस्तित्व म्हारी रचनावां इण चित्रामा स्यू अळगी किया राख सकै।

आजादी रै चार बरसां पैत्या राजस्थान रै आयूणी हिस्सै में बस्योड़ै रतनगढ़ माय मध्यम वर्गीय परिवार माय मोवी बेटो कुवावणरो सुभाग मिल्यो। स्याणो हुवण रै बैम स्यू लय'र सत्रा बरसां ताई रतनगढ कळकतो सिरदारशहर अर बम्बई मांय रैयन पढाई रै नांव माथै अणूतो भटकाव।

(तमै पाच बरसई मेट्रिक पास नई करीसको) गुजराती मास्टर र कैवता थका भी दसवी पास करी। म्हारा आदरणीय गुरु श्री एस पी सिंह री सत प्रेरणा स्यू मैं मायता री मनस्या नी हुँवता थका भी एकलव्य परम्परा माय पढणै री हूक मन माय लिया पैतृक धन्धै मे रुचि राखणै र खातर आयुर्वेद माय विशारद पासकरी। कलिज अर विश्वविद्याल्या रै बारै बारै फिरता थका भी ऊंची शिक्षा रो सुपनो पूरो करयो। पढाई री भूख गळदाई मांय बदळ रैयी है। एम ए री दो-दो डिगरया रो बोझ बैमन स्यू लादया फिरु हू, ठा नी आ डिगरया स्यू म्हारो अपमाण हुयो है कै डिगरया रो म्हारै स्यू।

कविता क्यू अर किया लिखणी शुरु करी आ खरी खरी तो नीं यादपण आ कैय सकू कै पढाई अर बैकारी र दिनां विवाळै आक्रोश-कुण्ठा री तपण सू काचरी ज्यू तूटतो रैयो अर मन मे कवितावा रा उदगार बतूळियै री दाई उठता रैवता अर ओळया बणनै उतर आवता कागद माथ।

म्हारी कवितावा आप प्रबुद्ध पाठका नै किसीक दाय आयसी आ तो थै ई जाणो।

—श्याम महर्षि

बसत पचमी
सम्वत् २०३४

आन्तरो

मैं हिन्दू हू मुसळमान हूँ
किरिस्तान ह ।
म्हारा न्यारा-न्यारा
भगवान है ।
जिका न्यारी न्यारी जिगा
मिंदर, मैजत, अग्निघगर
अर गिरजाघर माय
बिराजे ।
सगळा रै भगवान रै
दो कान, दो हात, दो पग
अर अेक नाक हुवै
सगळा रै भगवान रो
उणियारो
मिनखा स्यू
रळतो-मिळतो हुवै
पण' फैरु ई

इणनै पुजणिया आपा
आपसरी माय
इया लडा
जिया को ई
न्यारी-न्यारी जात रा
जीव-जिनावर होवा।
अेक रुप मे
घडीजेडिया इण
भगवान रा भगत
आप-आप रै भगवान नै
बडो बतावै
खून-खरावो करै
लडै मरै,
काई करै वापडो
अकेलो भगवान
आभै बैठ्यो
सुबकिजै
आसू वुहावै
अर पिस्ताओ करै
इण बातरो
क'जैमैंमिनखा नै
घडतो वैळा
सिस्टी रै बीजा
जीवा दाई
इण माय

कदास अक्कल नी घालतो
तो आज अे
म्हारा न्यारा-न्यारा भगत
आपसरो मे म्हारै
उपरा नी लडता ।
भगवान दुखी होय
मन मार्‌योडो सो
उसास पड्यो
"अबै हू धरती रै ठिकाणै
नी जावू ला
जठैरा मिनख
म्हनै कैद करणो चावै ।"

काळ

काळ
विना-बुलायै
बटाऊ दाई
घिगाणै-अचाण चुक्यै ई
बिरखारो गळो मोस'र
भूख
अभाव
बिमारी
अर दुखडै नै सागै
लैय'र
आंधी-तूफान रै बेग दाई
आ उब्यो
गावडिया माय
नागो नाच
करण लाग्यो।
गावरी बस्ती रा लोग

इण रै आणै रै
सरणाटै स्यू ई
सैम-गैम होग्या,
धूजण नै लागग्या
हात पग सूज ग्या
काळ रै आणै रै
पेल्या ई
याद आवता ई
उवारा कण्ठ सूक ग्या
काळ अर उणरै
सागडदिया स्यू
लडनै री हिम्मत
अब बामेनी रैयी।
भूख स्यू बिलखता
टाबर
फाट्योडा धावा पेर्या
घरवाळो
तिस्या डिडावता
डागर,
बाणियै रै
ब्याज मे बढोतरी,
खेतडला री सुनैड,
बाही ज पी डबल्यू डी रीसडक
रैवैन्यू रा जोडा
अर पचायत री मैड बन्दी

मरता-पचता भी
प्रतिशत रै नाव माथै
लू ट-खसोट
कारज वन्दी री धमकी ।
सायता रै नाव माथै,
सुबिजता री वात माथै
बचैडै भुगताण माय
अे समरथ लोग
"ऊपर स्यू हुकमनी आयो"
कैय'र
चुप राख दैसी
इण कल्पना स्यू
धारा जाडा जुपग्या ।
अेक दिन सिझ्या
गावरी गुवाड माय
सिरकार स्यू
ढोल वाज्यो
"काळ पडग्यो/दिनुगै स्यू
गाव रै डैलाणियै/जोहडै
माथै काम लागणो है ।"
अर
काळ रै
इतिहास माय
अेक पानों
ओजू जुडग्यो
□

अेक लाम्बी कविता

ढीगारलै गाव माय
वोदियै कूवै रो टाडो,
सात्यू सिझ्या री पो'र
उमो कोटवाळ
हेलोकर्‌यो,
कालै सूरज उगालो री वैळा
गाव री पचायत माय
सगला मुरया
बैठनै बिचार करैला,
क माणकिये सासो
री भाणजी
गाव रै जोहडै माथै
जाय 'र जोहडै रै
पाणी नै भिसैळा दियो
काओ कर्‌यो जावै,

— — —

पचायत री बैठक माय
फूसजी ठाकर
जालू चौधरी
मोवन माराज
जैसो दर्जी
केसरो माळी
शिवो लुवार
अर
रामूडो चमार
भेळा हुया
पचायत री बैठक
सरु हुयी
गाव रा घणकरा
लोग लुगाई बैठया हा
चुपचाप
न्याव री बात
सुणनै रै वास्तै
ठाकर सा बोल्या
"गाव माय अबै
सुगलोवाडो बढतो जायरियो है,
कारु कमीणा
आप री मरजादा
छोड 'र
माथ हगणनै त्यार हुयरिया है,
की जावतो होवणो चाहीजै

नी जणा की नुकसाण होवैलो"
मोवन माराज हुकारो दियो।
जालू चौधरी आपरी बात
ढेरियो कातता-कातता
कैयो क आजादी सगळो
आरै माय हीज बडगो
जको आपरी
ठौड पर रैय परा'र नी जीवै,
जैसो दर्जी बोल्यो —
"माणकियै सासो नै
डड मिलणो चाहोजै
चायै गाव स्यू काढो,
चायै जुरमानो करो,
चायै वैगार देवो,
नी जणा
धम भिस्ट होवतो रैवैलो
भिसटवाडो इया ही बढतो जावैलो"
शिवो लुहार हा भरी।
केसरो माळी
खडो हो परो'र बोल्यो—
"ठैठ स्यू म्हारा बडका
जोहडै री रुखाळी
राखता आया है,
मैं पण समझण लाग्या पछै
ओ काम करतो आयो हूं,

पण ठा नो
माणकियै सासो रै
परिवार री आ हिम्मत किया पडी
मैं तो कैवू क
इणनै गाव स्यू
सिर मु डाय'र काढयो जावै ।
चिलम पीवतो रामूडो चमार
बोल्यो—
"वोझो वरको जात है
इण सागै
की नरमी वरती जावै
वापडा जुगा स्यू वस्ती माय
रैवता आया है,
सात्यू जाता नै रैवणरो
हक है।"
रामूडै रो इण वात माथै
पच-पचाण री
त्योर्‌या चढगी
चौधरी खखार र की ऊचो हो बैठ्यो
ठाकर सा होक्कै न खैंच मु ह ऊचो करयो
मोवन माराज आपरा हात मसळण लाग्या
माणकियो नू' स्यू जमी कुचरै हो
रात घणी चली गयी
पण नतीजो पचायत
निकाळ नी रैयी हो

पच प्रधान रो
हुकम हुयो
माणकियै रै परिवार नै
सुणाई रो मोको
दियो ज्यावै है।
माणकियो सासो
हाथ जोड'र खडो होयो
पचायत माय
काना फुसो सरु हुयगो,
इत्ते नै
माणकियै सासो री घरवाली
पूनकी सासण
उब्यो हुयो अर
पचायत स्यू
बोलणै री इजाजत मागी
पचायत स्यू हुकम होयो
बा बोलण लागी
"जद स्यू मैं
इण गाव माय
व्याहीज'र आयी हूं
थे पचायत रा रुखाळा
धम रा हिमायती
म्हारी गुवाडी माय
खाट माथै आय'र
सारी-सारी राता

म्हारी छाती नै मसळता
डील नै मरोडता
अर म्हारै होठा नै
चाटता रिया हो
इण स्यू थारो धम,
गाव री मरजादा नी टूटी,
अर आज
"ई परायो टाबर स्यू
भोळपण माय
जोहड़ै री पाळ माथै
जाणै स्यू पाणी रै
हात लागता ई
थारै गावरो धम भिस्ट होयग्यो
म्हनै आ बात समझायी जावै
कै कुण सो कायदो अर धम रो
आण है, जिण माय
म्हारै शरीर'र हाथ मु 'डो
लगाणै रो सै'नै हक है
अर म्हारै टाबरा रै
पाणी रै हाथ लागता ई
धम भिस्ट हो जावै।"
पूनकी सासण री बात
सुण'र पचायत माय
सुनैडआयग्यी
जाणै चिड्या माय

भाठी पड ग्यो हुवै ।
न्याव री ताकडी टूटगी
धम रो नेठ्यो छूटग्यो
कर्म री लडचा उळझगी
अर पचायत विना
सळटाव अर नतीजै
उठ'र बहीर हुयगी ।

आज रो रावण

आज रो रावण विराजै है
आपरै ठाडै मजबूत गढ माय
राम आज भी घर काढ्योडा सा
भीड भडाकै रै वन माय
भटकीजै है ।
सीता डर्योडी सी, निस् फिकर
नी हुयी ओजू ताई
आज रा लिछमण रुठ्योडा है
भाई राम स्यू ।
भारत री भोळी जनता
हजारा बरसा स्यू बाळ रैयी है
अेक रावण नै
गाव अर सै'र माय
नित नु वा जलम लैवै
रावण अर उवै रा भाई

ओजू ई देस माय
डराओ, भगाओ जावै है
सीतावा अर लतावा ।
आज रो राम निवळो
रावण अर उणरा भाई
होग्या है अणगिणत रा
समझ रिया है
राज आपरो ।
सतजुगी रावण रै
वीस भुजावा ही
पण, आज रै रावण कनै
सैकड़ा हात है,
कद ताणो चालसो ओ
राम-रावण रो जुध,
कदै फिरैली सीतावा
हुयर आजाद,
कठै है लिछमण सरीखा भायो
अर्, हडमान सरीखा सेवक ।

चौथ रो चाँद

उण बिरती नै प्रणाम !
जिण स्यू
आज भी
चाद ताणी
पूगता थका
लुगाया
चोथ रै
चाद नै
ओजू ई
अरग देवै
पूजै
अर, आसीस लेवै ।

□

पोसाळ

सिक्सा रो
बा दुकान
जठै मा'रजा
टैम रो मोल
पईसा स्यू करै
चैला जठै
आपरै टैमनै
भणाई नी करणै री
ताकडी स्यू
तोलण नै रीजै।

भावा रो बिस्वास भजाणै स्यू

जूणी रै माथै मे धूड गिरै
बखता री बाता मे सास जुडै
सगळै दिन वै चिलमा पीवै
कुण जाणै किण री साख धुडै
राता नै लाता वाणी पडै
सूरज री चढती उगळी स्यू
कुण जाणै किण रो काम सरै
भावा रो बिस्वास भजाणै स्यू
खोदीजै चिन्तन री मो 'रा
ओकळ री धरती धोरा स्यू
बोलीजै भरम सजोरा
सिरजण चुक्योडा धोरा स्यू ।

मागतोडो

भोखै बाणियै री
गुवाडी
सिझ्यारी वेळा
चोखले चमार
रो छोरो
धूजतो-धूजतो
माथो नीचो करयां
आय उब्यो।
भोखै नै
नैडास रो बोध
करावतो बोल्यो—
"ताऊजी
माऊ
दो कीला
दाणा मगाया है

पईसा
परस्यू ताई
बापू की ठीक
होवता ई
मजूरी ल्यार
पैलपोत थानै
दैस्या,
घरा दोय दिना स्यू
चूल्है हाडी
नी चढी है,
बापू री आसग कोनी
मा हीडा-चाकरी करै,
हू धनै सियाग
रै अठै
मजूरी गियो
परण
बो पै' ला रा पईसा मागै हो
बीड लिया।"
छोरै री आख्या स्यू
आसूडा ढळग्या
भीखो गरज्यो
"म्हनै ठा नी
थारो बाप जीवै है क मरै
पै 'ला रा रुपिया रो ब्याज
५ रु सैंकडा स्यू

ओज्यूं ई बाकी पड्यो है,
१०० रुपिया रै बदळै
थारी च्यार भी 'ना री मजूरी स्यू
म्हारा रुपिया नीं उतर्या है,
छोरो घणो गिडगिडायो
रोयो
हात जोड्या
पण
भीखै रो काळजो
नी पसीज्यो ।

□

रुखाळा

मेह अन्धारी रात
कुतिया भू कै हा
चोर चोरी कर 'र
भाजरिया हा
कई-अेक
सिपाई भी उवा रै
नारै भाजरिया हा
कुतिया जोर जोर स्यू
भू कण लाग्या
सिपाया माय स्यू
अेक बोल्यो—
"रै कुतिया
चुप रैवो
बिरादरी नै भी नीं जाणो"
कुतिया सरमीज 'र
चुप हुयग्या।
□

Purchased with the assistance of
the Govt of India under the
Scheme of I[illegible] tance
to voluntary [illegible] an
[illegible]ations W[illegible] L[illegible] b[illegible] L[illegible]brarie
in the [illegible]

डर

समाज रो गळेडी
जूनी परम्परावा नै
तोडननै
मिनख
इ या डरपीजै
जिया कोई
फूट्योडी
हाडी स्यू
बण्योडै माथै
अर
फाट्योडै घावा स्यू
ढकैडै
बिदरगी
अड़ वै स्यू
भरमीजै
डरपीजै
काळा कागला

□

सभ्यता

कल्वा, सभा, सोसाइटी
अर सभ्यता रो
तकादो
करणियो मिनख
प्रागेतिहासिक
टैम री
सभ्यता स्यू
बराबरी अर ईसको करै—
नागो रैवणो
ओपन सैक्स,
हिंसा स्यू हैत
अर
लूंठा कसूर
कर परां' द

आपरी पराचीन
सभ्यता माय
चावै है
घालणी साख ।

बुढापो

टाबर पणै स्यू
सीधो ई
जुवानी रै उपरा कर
उलाघ'र आयग्यो बुढापो
पण
इण उतावळ नै देखता
कोओ इचरज
नी है
क्यू 'क जुवानी रा सुपना
टाबर थका
दिखीजण नै लाग ज्यावै,
इण खातर तो
जुवानी री समझ
लोगा नै
बुढापै ताणी की नीं आवै ।

बुढापै री बदनामी भी
अब
टाबर थका स्यू लैय 'र
अधेड उमरताणी
होवण लागगी है।
धोळा वाळ, कम सूजणो, कम सुणनो
अर बोखो होवणो
अै सगळा लखण
पाच बरस रै टाबर स्यू
लैय'र बुढाप रै असली
टैमताणी बदै भी
दिखीजणा सरु होवण
लाग ज्यावै है,
आज रो बुढापो
सूधै अर स्याणै पणै
रो प्रमाण नी रियो है।

मिनख

मिनख जको उतावळ स्यू
बढरिया है,
वो स्यू ई घणो उन्तावळ स्यू
मिनख पणो निवड रियो है,
लोग आपरै डील नै
जीवतै मास रै लोथडै दाई
मन मारचोडा सा
लिया फिरै
अर,
मन ई मन ओ विचार करै
क'मन अर डील रो ओ
सम्बन्ध क्यू बण्यो है।
वै जो रिया है,
इण खातर कै
मर नी रिया है।

मगळा ई आपरी
मोड स्यू, डरयोडा सा
डर फर हुयोडा सा
अेक-दूजै नै
ओपरी निजर स्यू
देखता थका
जा रिया है, अर
मन ई मन माय
सोच रिया है क
साळा ई चोर है
अर कोनी चीज
चोर'र नैय जाय रिया है
जको नै नैय जाणो
अेक दूजो
दुस्मन है।

□

मानीजता

पैं'ला होवता मानीजता
वै लोग
जका कन्नै
होवतो मोकळो धन
राखता रतवो घराणै'रो
का साख होवती, धर्म अर ईमानरी
जिण स्यू वै
गाव, समाज अर कुटम्ब माथै
करता पचायत अर न्याव ।
आज रै नु वै सन्दभ माय
बदळाव राखतै टैम माय
मानीजता री परिभाषा
बदळीजगी—
अबार रै मिनख नै
मानीजतो बणनै रै खातर

चाईजै
पच, सरपच
अर का कोओ लूठी
पार्टी री
मैम्बर सिप
का-फैर करतो होवै
दसखत कोओ
रब्बड री मो'र माथै ।
का-मानीजतो वो है,
जकै-लारै होवै
भीड घणी स्यू घणी
का-कोओ करतो हुवै
इस्यो काम धन्धो
जिण स्यू पईसा
ईंया वणै जिया कोओ
आभै माय तारा ।
का-राखतो होवै मोकळा
लट्ठ भारती अर
गुण्डा री टोळी
वो होज ही है
आज रो मानीजतो मिनख ।

बौपारी

कैवतो सुणिजै
अेक बौपारी दुजै नै
'राज रा नित नु वा
अडगा स्यू
सगळो वौपार रुळग्यो''
पण
कोओ भी बौपारी
आपरो दिवाळियो निकाळ
रसोइयै रो काम करतो
का-कठै ई हळ वावतो
अथवा कठै ई चपडासगिरो करतो
निजर नी आव ।
दिनो-दिन अै
बौपारी वाजणिया लोग
घणा-घणा पईसा वाळा

होवता दीसै है,
पण
आरै अठ रा हाळी-मुनीम
अर दूजा मजूरी कोणिया लोग
दिन-दूणा गरीब होवता
जाय थिरा है।
वीपारी दुकान माय
बात करै खुमर-पुसर माय
राजरै टैक्सा अर उपरला
खरचा स्यू तो अब
जीणो ओखो हुयग्यो है
कारज बन्द करणो पडसी
पण,
फैर भी
गाव अर सै रा माय
नित नुवी
हेल्यां-कोठ्या
अर बगला
बणता दिसै हैं।
ब्याव अर जलम दिन रा
उछाव आं रै
बिया ई मनाईजै
जिया रजवाडा अर
नवाबा रा ठाठ,
काओ ठा राजरा

समाजवादी घोडा
आनै किया नी
नावड रिया है।
बौपारी रै लैबल स्यू
मुलक माय घणा लोग
तस्करी चोर बजारी
जमाखोरी अर दूजा दूजा
वै धन्धा कर रिया है
जका
समाज, धर्म, जाति
अर मुलक री
मान्यता स्यू
घणा-घणा अळगा है।
केओ-आनै समाज शोषक कैवै
तो केओ धवळा हाती
केओ-आनै मुलक रा दुस्मी समझै
पण
सगळा आरै सामन
आवता ई अपनै आपनै
अेकदम गरीब, अर अपाहिज समझै।
भूखा नागा लोग
अज्ञान रै कारण
आरै आगै हात जोड-जोड
अपनै आपनै भागी समझै,
तो केओ समाजवादी,

अर क्रांतिकारी कैवावणिया लोग
आरै
अैस, आराम नै देख-देख
हात मसळै अर
क्रांति आवणै रै अैलान रै सागै
चाल पडै घरा कानी
जठै सूकी-पाकी
रोटचा सू बाथरडो
करणनै लाग ज्यावै।

किरसाण

फाटयोडा गाबा पैरया
ओ दिन-रात
माटी मे सिर दिया
मरतो-पचतो रैवै,
इण री कमायो स्यू
समाज री सात्यू
जात्या पैट भरै,
जीवै
पण,
ओ खुद !
भूखो-नागो रैवै
सियाळ री डाफर
उन्हाळै री ताप
अर चौमासै री
बिरखा माय

चेक सास स्यूं
कारज करै ।
इण रै कमतर रै
फळ स्यू
वडा लोग
और घणा
वडा वणग्या
इण रै काम स्यू
धरतो सोनो ऊगळै
आभो इमरत वरसावै
वायरो मन हरखावै
पण ओ
बिया ई
भूखो, तिरस्यो
दिन-रात
आपरै
काम माथै
लाग्यो रैवै ।

चिमनी रो धुवो

मिल री
चिमनी रो
धुवो,
मिल माय
काम करता
मजूरा रै
वळतै खून
अर
गळती हाड्या री
ओळखाण
करावै।

साप

समाज रा काळ वेलिया
सापा नैं
पाळै,
रुखाळै
अर
वद राखै
आपरै
गिटारा माय
टैम-टैम माथै
वानै, नचा-नचा
समाज री
भीड स्यूं
आपरो सुवारथ
पूरो करता
रैवै ।

पाठ

क—मानै
कबूतर
शांति रो प्रतीक
ख—मानै
खरगोश री रफ्तार
वगतो मुलक
ग—मानै
गगन भेदी उवाज स्यू
बोलता मिनख
"मैनत स्यू मुलक बडो हुवै"
पाठ पढावतो मास्टर
मन ई मन माय गोखै
भणिजणिया टाबर
कद ताई
याद करैला
यो पाठ ।

जहर

भूख
गरीबी अर
कमठाण रो जहर
पीवतो,
आज रो मजदूर
अर किरसाण ।
देस रा
देवता हरखोजै
कै अबै
ओ जहर
दूजां नै
नी पीवणो
पड़ै ।

ऊमीजतो सैः'र

मिनखा रो
भोड स्यू
ऊमीजतो सै 'र
गाव कानो
लफासा लैवै
कदास,
उमीज मिट जावै,
पण
बो आ बात
बिसरै कै
गाव रा लोग
म्हारै कानो
आख मीच र
आय रिया है ।

हाण्डी

हाण्डी रै पीन्दै
माय चिप्योडो
साग
लफास लाग्योडै
मोटयार रै
पेट री होड करै,
अर
दोनू ई
आप-आप रै
अस्तित्व नै
सावचेत
राखणै खातर
जुध करै
भरैडी हाण्डी
अर पेट स्यू ।

मइला बरस

मइला बरस
माय
व्याईज आयोडो
अणपढ बीनणी
माग करै
आपरै
मोटयार स्यू
उवी अैंडो
री सैण्डल,
टरीन री साडी
थर सोनै रै
बगड री।
परैज करै
रोटी पोवणै
कपडा धोवणै
पाणी ल्यावणै स्यू,

अर
वखाण करै—
"मइला वरस री
लुगाई-मोटयार
सैग वरोवर है
अवै म्हानै भी
बोलण री दरकार है।

छूट

छूट है,
बोलण री,
कम तोलण री
कम मापण री
जग ठगण री
पण,
छूट नी है
धाप'र खावण री
कमावण री
नर ज्यावण री
मन री बात
बतावण री।

भूरजी पितर रो नाडो

भूरजी पितर रो नाडो
आखा लैवै
नाथी वाई
आगै पाछै
नैडै-आ तरै
रो भिजोक मिटावै
भूरजी पितर रो नाडो
पेमतो रो बोरलो,
रुपलै रो
बाछडियो
चैनको रो पाजेब
बतावै
परचो दैवै
भूरजी पितर रो नाडो
सुत्या रा भाग जगावै
गै'लारो बात बतावै
चोरा रो साख घलावै

ठगां री जात बताव
भूरजी पितर रो नाडो .
नारेळ बधारयो
धूप खेयो
आखा दिया'र
हाथ जोडया
बोली हेमी जाटकी—
"म्हाराज बखाणो
टोडियै रो (छोरै रो नाव)
पेट दुखै, हिवडो हिलोरा खावै
काओ करु ?"
पितरजी माथो भु वायो
जबडक दिन्हो—
"जा-जा मीगणा कर देसी ।"

शिक्षा शास्त्री

अेयर कण्डीसन रो रैवासी
फस्ट किलास माय जात्रा करणियो
देस रो भणाई विसेसज्ञ
अमरिका इंगलैण्ड अर
बीजा पिछमी मुलका रो
चक्कर लगाय
मोटै दफ्तर माय
विराजै, अर विचार करै
मुलक रो डूबतो भणाई—
रै मोल माथै।

आपरै टाबरा नै
पब्लिक इस्कूल माय
भणाई खातर भेजै
खुद कैवरा माय जावै
अर सगळै टैम
चिंतन रो दिखावो करै
गरीबा री भणाई माथै।

भणाई अर छात्र अनुसासन रै
वास्तै
नित नुवी बैठका अर सैमीनार
बुलाई जावै
मुलक रै भणाई रो व्यवस्था
रो मिलाण करै
सिक्षा सिद्धात
री जूनी पोथ्या स्यू ।

पराईमरी स्यू कॉलेज ताई
सगळै आ ही कैवै
पढैसरया न पढणो चाहीज
बानै ओ ध्यान नी देणो
चाहीजै कै
कठै कायो हुय रैयो है
मुलक रो भणाई स्यू
आपरै चिन्तन नै जोडै
अर सिक्षा नीति री
असफलता माथै दु ख
परगट करै ।

नौकरी

पारस रै भाडै ढाई
भगवान रै दरसण दांई
मोत्या मु धो है
नौकरी,
काम करतो मिनख
जठै
काम करणै री
खिमता
गमाय रियो है,
वठै
वैकारी स्यू टुटेडो
मिनख
आपरी खिमता नै
कुण्ठाल कर रियो है
अर
खिमता रो माप कर रिया है
अफसर लोग
डिग्री अर पईसा रै

थर्मामीटर स्यू
बैकारी अर भणाई
बढ रैयी है
नौकरी अर साच
घट री है,
मोत्या मु घो है नौकरी।

मुलक रा ३० बरस

आजादी रा
३० बरस
इया पूरा हुयग्या
जिया को ई टावर
जनम लेय'र
टावर स्यू जुवान होयग्यो है।

आजादी रो ओ रुप
दिसणे मे घणो
रुपाळो, हिमाळो अर
सूरमो दिस्सै
पण
हाथ रो नब्ज दगतो
इया लागै
जाणें ऊपरा स्यू
तेज-तर्रार दिखतो
ओ ढोल
मांय स्यू

थोथो-मा दो
अर घणी सारी
बिमारया स्यू
दब्योडो है।

३० वरस रो इण
मुद्दत माय
इणरै किताई रोग
लाग्या अर छुटया
इण रो बिमारया न
घरआळा तो जाणै है
पाडोस्या ताण्या नै निग है
भूख मरो, बैंकारो, तस्करो
जमाखोरो अर रिस्वत खोरो
जिसो केयो बिमारया है
जिण रै कारण ओ
दिसणै माय सावळ
लागता थका भी
ओ मन ही मन माय
दब्योडो है,
मा दो होय रियो है।

पाक जुध रो जीत
बगला देस रो निरमाण
उद्योग-धंधै रो बिकास
अर के ओ साचा नैतावा रो

सेवा रो इन्जेक्सन
खावणै स्यू दिसरियो
ओ डील,
ऊपर स्यू फूटरो, फर्रो
अर जुवान।
३० वरस रै इण जुवान नै
ओजू ई आपा चावां तो
स्टेप्टो-माईसन रै इन्जेक्सन
री अेक पूरी फाईल देय'र
सावळ कर सका हा
पण
अठै ताणी इण
मोटयार नै आपा
देस अर कारज
रै मायै चाव री
खुराक टैम-टैम मायै
नी दैवाला
अठै ताणी
इण रो न रोग मटैलो
अर न
निरोग हो सकेलो।

पोमलो लुहार

पोमलै लुहार रो हतोडो
बादुडी रो धूकणी स्यू
लो (लोहा) अर
बीजा पदारथ
बळ अर गळै
चावै जिया कोरीजै
पण
पोमलै रो माग तोडो
बो'रो
टोकू बाणियो
व्याज-पड व्याज रो
तकादो करै
भोगळियो रवणै खातर
उण माथै
जोर लगावै ।
बादुडी रै ओढघोडा
घावा माय
झाकै,

वीरै हिडदै रा
किरचा-किरचा
कर परा'र
उण रै सागै
बलातकार कर
अर जुलमा री
साख भरै,
पण
पोमलै रै
हतोडै अर
बादुडी री धूकणी स्यू
टोकू बणियै री
जोर-जबर डील
मीं गळै।

दिवाळी

रिदियो चमार
दो रुपिया रोज
मजूरी पर
चैंजै जाव

बाजरी रो रोटी
कान्दा रो साग
खायर रिदियो,
बीरो लुगाओ, अर छोरो
दिना नै
धक्का देवै।

दिवाळी रै पाच
दिना पै'ली
बुधवार नै
रिदियै रो छोरो

डिफ्तिरिया रोग स्यू
जकडीजग्यो।
डागधर रो
जवाब
छोरै रो
धोरां कान्नी मू - "
पांचवो दिन
सै दिवाळी
सेठजी
मजूरा नै
मजूरी चुकावै,
तू काम थोडो करयो
दो रुपिया कम दैस्यू
तू परस्यू दैरो स्यू आयो
रुपियो कम दस्यू।
तू रिदिया
पांच दिना स्यू
जावक कोनी आयो
हैली र काम मांय
भिजोक पडयो।
रिदियो
सुबस्यो
म्हारो छोरो
उतरग्यो
पांच दिन हुयग्या

हाडी चढी नै
सैंठजो दड़ूक्यो
म्हांनै ठा नी
काम माय भिजोक
क्यारा पईसा
क्यारी मजूरी
कोयी हिसाब
बाकी नी
और कठैई
मजूरी लाग।
रिदियो
घरां
झूंपड़ै आगै
बैठ्यो
सैं र माय
छूटता पटाखा
जगमगाता
दिवला स्यू
अरथ करै
आपरी भूख अर
छोरै री
मौत री
मुनैंड स्यू।

□

बैः लोग

सूरज रै
तावडै स्यू
काळा पडता
बै लोग
मुळकती
मैणत स्यू
हैत घालतै
किरसाण रै
पसीनै री
बूंद स्यू
होड करै
रात थामणै
री गोळयां
दिन भजाणै री

बोलता री
भोग करै
पण
फैरु ई
ऊगते सूरज
री किरणा री
रिफ्लक्सन
मैणत री
बूंद माथै
होव'र
वा लोगा नै
बम्ब रै
सुडकै
ज्यू डरावै ।

□

डिग्री

डिग्री रै
बोझ स्यूं
लदड पदड
जुवान,
अनुभव रै
निवडतै
भण्डार कान्नी
देख-देख'र
सोच करै
अर पिस्चतावै
कदास
गुणिजणां री बात
पढणां स्यूं
पै'ला ई
सीखतो।

उकळती ओकळ

उकळती
ओकळ ज्यू
म्हारो काळजो
ओर घणो
उकळिजै
जद
मैं देखू
बो लोगा न
जका
मुलक अर
समाज नै
चुस्सै इया
जियां कोयी
चिचड चुस्सै
भोळो-ढाळो
गाय नै।

रमतिया

भावना रा रमतियां
स्यू खेलतो
मिनख
आपरी जिनगाणी रै
धरा नै बचावै
ऊपर-नीचै
आगै पीछै
पण,
वै पाछा
पड-पड ज्यावै
अर
ओळू दिरावै
सोनै रै बाळपण री
म्हे ई रवैल्या
म्हे ई ढोया ।

नान्हो कवितावा

नेतो

किरसाण री दुहाओ
अर मजूरा रो आण
रो बखाण कर'र
पेट पालतो अेक
मोटयार।

अर्थ शास्त्री

भूख स्यू वायरडो करता
थका भी दूजानै
पईसा बणावण री कळा
सीखावण वाळो आदमी।

पूजारी

घणा घणा जुलम करता थकां
दूजा नै करम अर भगवान
रो डर दिखावणियो
दलाल।

राजनीति

वा बिमारी जकी स्यू
दूर रैवणियै नै ना समझ
अर माय रैवणियै नै
बिमार समझै

जातिवाद

सिखवाद
जाटवाद
मियावाद
अर
ब्राह्मणवाद
जातिवाद रै
जहर रो
अेक ही सुवाद।

□

बंदी

'ळा वन्दी
ा वन्दी
न्वा वदी
तकाळ
हल्का वदी
किल्ला वदी
अर फैरू
नसवन्दी।

□

ओकळ

आ ओकळ
पीळो मटमैलो
उकळती, बळती
जेठ, बैसाख रै
म्हीना माँय,
दिठाव करावै
मिनख नै
मृग तृष्णा रो
आ धरती ।
भाव रै
भतुलिया नै
आ ओकळ
भरमावै रिजावै
तिस्सै
तृप्ति रो सागर
दिठावै
आ धरती ।

भतुलिया

भाव रा
भतुळिया
भपोड दाईं
उगै अर
मिट ज्यावै,
फेरु ई
मिनख
मन रै
घोडै री
लगाम
आपरै
हात माय
राखण नै
रीजै।

चाय रो कप

चाय पट्टी रै
होटल माय
रफ्तार स्यू
बडतो
सुसस्कृत गिराक,
एक कप चाय
कय'र
आपरो दशन
कप री चाय माय
घोळै,
टेबल रै दूजै कानो
बैठ्यो
नूवो नेता
चाय रै कप माय
ल्याणो चावै तूफान

पण
होटल मालिक
जाणै
क आवता जावता
गिराक
चाय रै कप नै
बणाणो चावै
पानीपत रो मैदान,
दूजै दिन
कप की
ओर छोटा होग्या।

बैम

आदी रात नै
भोमजी सेठ री
हेली माथै
कोचरी करळाटो मारयो,
सेठजी री
नींद उडगी
मन ई मन
भरमिज्या
कदा'स
लिछमीजी
कोचरी माथै
चड'र
बी'र नी
हो ज्यावै ।

लफासा लेंवतो पेट

इनक्लाब जिंदाबाद रा
नारा लगाय
पेट भरणं री
म्हारी आदत
घणी पुराणी हुय'र
बिगडगी है,
अब मैं
चोराये, तोकू टे अर
गळो कू चला मांय
घेराव सत्याग्रह
अर हडताल बेच'र
पेट भरू ।
फेरू भी
लफासा लेंवतो
म्हारो पेट

कुण जाणै

मौमजी र नाव आगै
घ ना सेठ लागै
पईसा रो मार स्यू
पईसा बार सागै,
लाखां ई आव
लाखा ई लाग
घोतो रो मार स्यू
शेर आगै भाग
जनता स्यू नेता
नेता स्यू जनता
लेंवता-देवता
आगै ई आग
कुण आयो कुण गयो
सूत्या ई जाग
टैक्सा मे आपाधापी
लेय देय'र आधा माफी
कुण जाणै कठ पोव
कुण धोवै साफी ।

लीलटासी आंख्यां

म्हारी आख्यां मांय
लीलटांस रो रंग
पण, फेरुई
मन्नै ठिठावै
अन्धारो। अन्धारो
हळ वावतै मोट्यार री
काया देख'र
हरित क्रान्ति रै रोळा
मांय मन्नै
म्हारो रंगीन निजरा —
स्यूं दिवळ
लागतो दिस्सै।
दूध माय पाणी
अर पाणी माय दूध
मिलता • मिलता

गिलगिलो

जठ असाढ़ रो महीणो
मेरो चोधरी
डावलै गत री
ऊ चली टेकडो माथ
जमीन रै गिलगिलो
करै,
जमीन हडहडाट करतो
हँसे,
मेर चोधरी रै
हण साल
अरडाट करतो जमानो।

सुवाल

तोजूडो मेहतराणो
ओ जू ई
सुवाल करे
सेठाणो रै सुहाग स्यू
कै, कद ताणी
बिंधोजतो रैय स्यू
थार आं लम्बा हाथा
अर,
घोळा-घोळा गाबा रै
डर स्यू ।

पुजारी

शताबद्यां स्यू
भूखी रेवती
गरीब जमात नै
ओजू ई मिंदर रो
पुजारी
सीख दैव, व्रत करणै री
सठाण्या नै परमोद दैव
– 'थे दान करो''
ठा नी भगवान रो
पुजारी,
ऐक ई किलास माँय
भणोजणोया भगता नै
न्यारा न्यारा पाठ
क्यू पढ़ावै ?

बदळाव

जेंळ स्यू निकळतै
पतगै स्यू
घमाको हुयो
अर, हिन्दुस्तान री
गिदी मांय बैठ्या भगवान
बिदक'र
मैहला स्यू
बारै जाय पड्या।